IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, February 2020 Impact Factor: 4.819

iepUn io ;x d miU;klk e fgUn&efLye lEcU/k

M,- mn;Hkku ;kno

vfLkLVV iQlj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालय, अम्बारी, आजमगढ़

उपन्यास के विकास के लिए जिन स्थितियों–परिस्थितियों की आवश्यकता थी, भारत में वे औपनिवेशिक शासन के पश्चात अस्तित्व में आई। तत्कालीन परिवेश और परिस्थितियाँ ऐसी रहीं, कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर आगामी लगभग सत्तर वर्षो तक हिन्दी के पाठक–वर्ग की निर्माण प्रक्रिया बहुत धीमी रही। परन्तु तत्पश्चात उपन्यास साहित्य की श्री वृद्वि हुयी।

प्राचीन काल से ही भारत की संस्कृति सामासिक रही है। यहाँ पर समय–समय पर विभिन्न धर्मो का अभ्युदय व आगमन होता रहा है। इसलिए भारतीय साहित्य भी सामासिक हो रहा है। यह बात अलग है कि अलग–अलग समय में अलग–अलग विधाएँ प्रभावी रही है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को प्रभावी कर रही हैं। साहित्य का ध्यान उस तरफ अधिक जाता है, जो आज हमारी समस्या बनती जा रही है।

आज की समस्याओं में एक बड़ी समस्या साम्प्रदायिकता की है। साम्प्रदायिकता एक ऐसी समस्या है जो पूरे विश्व को प्रभावित कर रही है। कहना न होगा, कि विश्व का मानव समाज एक नया आयाम पैदा कर रहा है। परन्तु यह विकास केवल वृद्वि का विकास है, विज्ञान का विकास है, भौतिक संसाधनों का विकास है। वह विकास मानवीय सम्बन्धों का विकास नहीं है। विश्व के मानवीय सम्बन्ध बहुत कुछ धर्म से प्रभावित होते रहे हैं और आज भी प्रभावित हो रहा है। यहीं से जन्म हुआ है साम्प्रदायिकता का। जबकि धार्मिक होना और साम्प्रदायिक होना दोनों अलग–अलग बातें हैं। परन्तु आज साम्प्रदायिकता का जन्म धर्म के गर्भ से किया जा रहा है। जो पूरे विश्व की एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। वह मानव समाज को परमाणु की खोज कर रहा है जो विज्ञान के रहस्यों को सुलझा रहा है, वहीं मानव साम्प्रदायिकता जैसे अभिशाप का वाहक कैसे बना हुआ है यह चिन्ता का विषय है।

जहाँ तक सवाल साम्प्रदायिकता के दुष्प्रभाव का है, तो साहित्य हमेशा से उससे लड़ता रहा है। जब बात आधुनिक साहित्य की आती है तो हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक युग का साहित्य अपने समाज और संस्कृति को लेकर अत्यधिक जवाब देह बना हुआ है। आधुनिक युग में साहित्य की तमाम विधाओं में उपन्यास एक ऐसी विधा है जिसका जन्म पूँजीवाद के विरोध और उसके प्रभाव स्वरूप हुआ है। रामदरश मिश्र के शब्दों में ''कविता का जन्म एक अनिवार्य आदर्शवादिता को लेकर हुआ। उपन्यास का जन्म आधुनिक काल की यथार्थवादी परिवेश में हुआ है। उपन्यास पूँजीवादी सभ्यता की देन है। पूँजीवाद सभ्यता के विविध जीवन सत्यों को कथा के माध्यम से व्यक्त करने के लिए ही इसकी उत्पत्ति हुयी है। यह मात्र कहानी नहीं है। कहानी यानी कथा तो इसका माध्यम मात्र है, मूल वस्तु है वर्तमान जीवन की जटिल यथार्थवादिता जीवन मूल्यों का संक्रमण समाज के नए सम्बन्धों की निर्मिति उसके बीच उठते हुए अनेक प्रश्नों को भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने की आकुलता, नवीन भौतिक सत्यों के बीच बनती हुयी मानव चरित्र की नई दिशाएँ, ये सारी बातें मानो उपन्यास नामक विधा के माध्यम से फूट पड़ने के लिए आकुल थी।''[1]

---

[1]. राम दरश मिश्र– हिन्दी उपन्यास एक अन्तयात्रा– पृ0– 12

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, February 2020 Impact Factor: 4.819

आधुनिक युग में जो यथार्थ सामने आए उन्हीं को व्यक्त करने के सबसे सफल माध्यम के रूप में सामने उपन्यास आता हैं। उपन्यास अपने मूल में यथार्थवादी है, वह वहाँ–वहाँ पहुँच सकता है जहाँ यह स्वार्थ, लोलुप और क्षणिक समाज अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए घूमता रहता है। वह उसी समाज का आइना है जिस समाज ने उसको पैदा किया है। उपन्यास हर गली कूचे में घूम सकता है। वह समाज की प्रत्येक समस्याओं पर अपनी नजर दौड़ा सकता है। उपन्यास हिन्दी भाषा–भाषी जनता की राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति था।

यथार्थवाद एक कौशल है। कौशल इस अर्थ में कि यथार्थ को ही चित्रित करना साहित्य का उद्देश्य नहीं उसका उद्देश्य तो उन वृहत्तर सत्यों की प्रतिष्ठा करना है, जो मानव को ऊँचे उठाते हैं, किन्तु वह इस सत्य की प्रतिष्ठा बाहरी यथार्थ का चित्र अंकित करते हुए करता है यानी इस बाहरी यथार्थ अंकन से वह पाठकों को विश्वास दिलाता है कि वह जो कुछ कर रहा है, उनके कौशल के रूप में स्वीकार किया जाय या नहीं वह एक अलग बात है। एक बात जो हमें यहाँ कहनी है वह यह है कि उपन्यास यथार्थ पर अधिक अवलम्बित रहता है। वह यथार्थ के सहारे का ही चित्रण करता है। इतना कुछ कहने का अभिप्राय यह दिखाना रहा है कि उपन्यास की उत्पत्ति एक विशेष प्रकार की आवश्यकता की अभिव्यक्ति है और इसलिए कथा के माध्यम से समसामयिक समस्याओं को दिखाना भी उपन्यास की एक अभिव्यक्ति है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में उपन्यास का जन्म आधुनिक युग के उस दौर में हुआ, जब हिन्दुओं और मुलसमानों द्वारा संयुक्त रूप से लड़ी गयी लड़ाई को खत्म हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ था। वह दौर उपन्यास के प्रारम्भ और हिन्दू–मुस्लिम एकता का था। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक दरार दिखाई देने लगी थीं। इसलिए यहाँ पर भी उपन्यास दूरियों और दरारों से जूझता ही दिखाई देता है।

जिस समय हिन्दी में उपन्यास की शुरूआत हुयी उस समय भारत में अंग्रेजों ने भारतीयों के धर्म विषयक मामलों में हस्तक्षेप न करने का निर्णय लिया था, परन्तु कालान्तर में उन्होंने महसूस किया कि इस मामले में हस्तक्षेप अंग्रेजी साम्राज्य को मजबूत करेगा। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद मुसलमानों का राज्य एवं नवाबी समाप्त तो हो गयी, परन्तु वह ठाट व राजसी अंदाज बचा हुआ था। हिन्दू भी नई शासन व्यवस्था में जगह तलाश रहे थे। एक छत्र शासन हो जाने के बाद शासन ऐसी भाषा खोज रहा था जो आम जन के लिए सुगम हो। कचहरियों की भाषा 1837ई0 में हिन्दुस्तानी उर्दू कर दी गयी थी। हिन्दी नया रूप ले रही थी और राजा शिव प्रसाद सिंह 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मण सिंह इसे क्रमशः अरबी फारसी मिश्रित एवं तत्सम बहुल शब्दों से युक्त करना चाह रहे थे। भाषा का यह विवाद आमजन की नौकरियो से भी जुड़ा था। इसी बहाने साम्राज्य में अरसे से चली आ रही हिन्दू–मुसलमान सद्भावना में दरार भी पड़ी। और अब हिन्दू मुसलमानों के आपसी सौहार्द को आँच पहुँचने लगी थी।

उपन्यासों के आरम्भ का समय कठिन समय था। क्योंकि वह समय अन्तर्द्वन्द्व का भी है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जो रसखान आदि के लिए तो 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए का आदर्श तो रखते हैं लेकिन साहित्य और व्यावहारिक जीवन में इस्लाम के प्रति दुर्भावना की झलक मिलती है। भारतेन्दु युग का समग्र साहित्य इसी मनोभूमि में पलता है और अंग्रेजों को देश की दुर्दशा का जिम्मेदार मानने के बावजूद समाज में धर्म के गिरते स्तर के लिए मुसलमानों को उत्तरदायी ठहराता है। वीर भारत तलवार ने रस्साकसी में इस शब्द को उभारा है।

सन् 1880ई0 में लाला श्री निवास दास का परीक्षा गुरू आया। परीक्षा गुरू को हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्द में ''यह एक शिक्षा प्रद उपन्यास है''[2] यह उपन्यास शिक्षाप्रद इसलिए है क्योंकि इसमें

[2]. रामचन्द्र शुक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0– 258

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, February 2020 Impact Factor: 4.819

समकालीनता को ध्यान में रखा है। रामदरश मिश्र के शब्दो में ''लेखन ने समकालीन यथार्थ को तत्कालीन परिवेश में चित्रित किया है।''[3] उपन्यास में उन्नीसवी शताब्दी के उभरते मध्य वर्ग का अंकन है। जिसमें अंग्रेज, हिन्दू, मुसलमान सभी पात्र हैं, जो लाला मदन मोहन के सह कर्मियों में है और अन्य पात्रों की तरह समाज का एक हिस्सा है।

शुरूआती दौर से ही हिन्दी उपन्यासों में हिन्दू–मुस्लिम दोनो पात्र साथ–साथ मिलने लगते हैं। राधाकृष्ण दास द्वारा रचित 'निस्सहाय हिन्दू' (1890) हिन्दी का पहला उपन्यास है जिसमें मुस्लिम समाज का अंकन किया गया है। पहली बार मुस्लिम पात्रों का समावेश निस्सहाय हिन्दू में ही देखने को मिलता है। समकालीन मुस्लिम समाज दो वर्गो में विभक्त था। एक वर्ग कट्टरपन्थी धर्मान्ध मुसलमानों का था, जिसमें मौलवी अब्दुल अजीज जैसे लोग थे। इस वर्ग के लोग हिन्दुओं से द्वेष भाव नहीं रखते थे। परन्तु यह उपन्यास अलगाववादी न होकर एकतावादी है ''निस्सहाय हिन्दू साम्प्रदायिक एकता और मानवीय उदारता का प्रतीक है''[4] राधा कृष्ण दास द्वारा रचित ''निःसहाय हिन्दू'' उपन्यास इसलिए ज्यादा महत्वपूर्ण है कि ''19वीं शदी के उत्तरार्ध में गोरक्षा का मुद्दा जितना धार्मिक था, उससे कहीं ज्यादा राजनीतिक था। अपनी राजनीतिक ताकत का प्रदर्शन करने के लिए मुस्लिम भद्र वर्ग खुलेआम गोकशी करता था या उसे समर्थन देता था तो उसको रोकने में मिलने वाली सफलता या असफलता से हिन्दू भद्र वर्ग की राजनीतिक ताकत की माप होती थी''[5] दयानन्द सरस्वती व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने क्रमशः 1880ई0 में 'गौकरूणा निधि व 1881ई0 में गो महिमा नामक पुस्तक लिखकर गाय की धार्मिकता को पुनः उभारा और गोरक्षा को हिन्दू अस्मिता का प्रश्न बनाया। सन् 1880–81ई0 में मिर्जापुर में बकरीद पर गोकशी कर रहे अकबर अली खाँ को मना करने के लिए हिन्दू–अदालत तक गए थे, लेकिन अंग्रेज सरकार ने अकबर अली खाँ के पक्ष में मत दिया था जिससे समाज में गोरक्षा को बड़ा मुद्दा बनाने का वातावरण भी तैयार हो चुका था। 'निःसहाय हिन्दू'' उपन्यास इसलिए भी मूल्यवान है कि सन् 1884 में 'भारत मित्र' पत्र में लगातार एक विज्ञापन छप रहा था कि ''गोवध निवारण विषय पर जो कोई ऐसी रचना– काव्य, नाटक या उपन्यास लिखेगा 'जो आर्यजन के चित्र में घृणा लज्जा और उत्साह बढ़ाने वाली हो' उसे 50/ से 100/ रूपए तक का पुरस्कार दिया जाएगा।''[6] और यह पुरस्कार सबसे पहले 'सुकवि' पंडित अम्बिकादत्त व्यास को उनके नाटक 'गोसंकट' पर मिला। ऐसे समय में 'निःसहाय हिन्दू' उपन्यास हिन्दू–मुसलमान सम्बन्धों का सौहार्दपूर्ण एंव असम्प्रदायिक चेहरा लाता है।

''निःसहाय हिन्दू'' का एक पात्र मौलवी अजीज, मदन मोहन तथा माधव प्रसाद के साथ देश हित के लिए स्थापित 'भारत हितैषिणी सभा' का सदस्य है। वह नए राष्ट्रीय विचारों का इंसाफ पसंद युवक है। वह मुस्लिम शासनकाल में हिन्दुओं पर किए गए जुल्म की निन्दा करता है। वह कुरान शरीफ के साक्ष्य पर गोकशी, पेड़ काटने, आदमी की खरीद फरोख्त करने और शराब पीने को गुनाह मानता है। वह बकरीद के अवसर पर मुसलमानों द्वारा की गयी गोकशी का विरोध करता है। ये सारी बातें हमें इस तथ्य तक पहुँचाती हैं कि तत्कालीन उपन्यास लेखन भी साम्प्रदायिक सौहार्द ही स्थापित कर रहा था। जब उस समय चारो तरफ हिन्दू और मुसलमानों में मतभेद खुलकर सामने आ रहे थे तो ऐसे समय यह उपन्यास हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द की दृष्टि से महत्वपूर्ण ठहरता है।

विस्तार से जाकर देखने से यह ज्ञात होता है कि 'उपन्यास' एक प्रकार से सत्य की खोज और अययार्थ एवं असत्य या छद्म का ध्वंस करने का एक साहित्यिक हथियार है। मानव जीवन के यथार्थ का चित्र देने की आकांक्षा रखने वाली इस विधा ने मनोरंजन के लिए परम्परागत साधन के रूप में कथा तत्व को स्वीकार किया, परन्तु मानवचरित्र के माध्यम से जीवन के विविध

---

3. राम दरस मिश्र– हिन्दी उपन्यास एक अन्तयात्रा–पृ0– 24
4. विश्वम्भर मानव– उन्नीसवी शताब्दी के उपन्यासकार –पृ0– 96
5. वीर भारत तलवार, रस्साकशी– पृ0– 333
6. वीर भारत तलवार– रस्साकशी– पृ0– 327

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, February 2020 Impact Factor: 4.819

रूपों का उद्घाटन करना ही उसकी आकांक्षा रही है। समाज के परिवर्तनों के साथ मानव जीवन के बदलते प्रवाह के अनुकूल दो सौ वर्षो तक अपने को ढ़ालने का प्रयत्न उपन्यास विधा ने किया। इसीलिए अन्य विधाओं की तुलना में वह लचीली और सर्वसमावेशी विधा कहलाई।

इस काल के उपन्यासों की प्रमुख समस्या हिन्दू–मुस्लिम समस्या नहीं थी। यदि हम 'निःसहाय हिन्दू' के बाद देखें तो देवकी नन्दन खत्री का प्रसिद्व उपन्यास चन्द्रकान्ता (1891) एक ऐसा उपन्यास है जिसने उपन्यास के स्वरूप में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया। यह एक तिलिस्म ऐयारी उपन्यास है। जिसमें जादू की काल्पनिक दुनिया है। परन्तु इसके सम्बन्ध तत्कालीन समाजों से ही गुँथे हुए हैं। इस उपन्यास में उस समय चल रहे सामाजिक अलगाव के बिन्दु भी दिखाई पड़ते हैं। इस उपन्यास में समाज के हर वर्ग के पात्र हैं। उपन्यास में इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि मुसलमान विश्वास के पात्र नहीं है। कुमार वीरेन्द्र सिंह का कथन ''सेना की सबसे अगली पंक्ति में मुसलमान सैनिकों की टुकड़ी रखी जाएगी ताकि युद्व में पीठ दिखाने पर हमारी सेना, तोपखाना आदि इनको मार सके।''[7]

इन सब बातों के माध्यम से उपन्यासकार सिर्फ यही कहना चाहता है कि मुसमलान विश्वासघाती है। यह उपन्यासकार की अपनी समझ और सीमा है। या यह भी कह सकते है कि उस समय हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्ध आपसी वैभनस्य से घिरे हुए थे। उसी समय हिन्दी–उर्दू विवाद भी पनप रहा था। इसलिए भी ऐसा दिखाई देता है। जबकि ऐसा नहीं था। इस उपन्यास की चर्चा इसलिए करना आवश्यक है क्योंकि यह एक ऐसा उपन्यास हैं जो पाठ्कीय स्तर पर क्रान्ति ला देता है। राम चन्द्र शुक्ल के शब्दों में ''इसे पढ़ने के लिए ही न जाने कितने उर्दू जीवी लोगों ने हिन्दी सीखी''[8] चन्द्रकान्ता का छद्य विमर्श तत्कालीन समाज में पल रहे मानसिक बुनावट का परिचय देता है जिसे हिन्दी–उर्दू विवाद एवं हिन्दू–मुसलमानों के बीच आपसी वैमनस्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।

किशोरी लाल गोस्वामी हिन्दी के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में स्वीकृत हैं। गोस्वामी जी ने लगभग 65 उपन्यास लिखे इन्होंने उपन्यास नामक पत्रिका भी निकाली। एक उपन्यासकार के रूप में गोस्वामी जी की पहचान एक मुस्लिम विरोधी लेखक के रूप में रही है। इसमें संदेह नहीं कि उनकी ऐतिहासिक दृष्टि पूर्वाग्रह पर आधारित है। गोपाल राय के शब्दों में ''यह उस युग की प्रचलित हिन्दू भावना थी जिसके होने में ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ–साथ अंग्रेज इतिहासकारों की भी भूमिका थी जो हिन्दुओं मुसलमानों में फूट–डालने की ब्रिटिश शासन नीति के तहत इतिहास को तोड़ मरोड़ रहे थे।''[9]

[7]. देवकी नन्दन खत्री– चन्द्रकान्ता – पृ0– 82
[8]. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0– 273
[9]. गोपाल राय– हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ0– 84